Date – 20.04.2020

Class – B.A – I (Honours)
Political science

Name of the Guest Teacher–
Khushbu kumari
Department of Political science
V.S.J. College, Rajnagar

लोकतंत्र (अर्थ, गुण एवं दोष)

प्राचीन काल से लेकर आज तक विभिन्न प्रकार की शासन प्रणालियां विद्यमान रही है। इनमें से राजतंत्र, अधिनायकतंत्र, कुलीनतंत्र एवं लोकतंत्र अधिक प्रमुख हैं। वर्तमान समय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासन व्यवस्था लोकतंत्र को ही माना जाता है और विश्व के अधिकांश देशों ने इस शासन-प्रणाली को अपनाया है।

लोकतंत्र आज के समय की निश्चित रूप से सर्वाधिक लोकप्रिय धारणा है और अपने आपको 'लोकतंत्रवादी' कहना बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध का फैशन बन गया है। आज लोकतंत्र की विविध धारणाएं, अस्तित्व में आ गई हैं। इनमें प्रमुख है – लोकतंत्र की उदारवादी धारणा, बहुलवादी धारणा, विशिष्टवर्गीय धारणा। इनमें से उदारवादी या शास्त्रीय धारणा ही लोकतंत्र की निश्चित रूप से सर्वाधिक प्रमुख अवधारणा है।

Scanned with CamScanner

लोकतंत्र का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'डेमोक्रेसी' ग्रीक शब्द 'डेमोस' (Demos) और 'क्रेटिया' (Kratia) दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य 'शासन की शक्ति' से होता है। इस प्रकार लोकतंत्र उस शासन-प्रणाली को कहते हैं जिनमें जनता स्वयं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण जनता के हित को दृष्टि में रखकर शासन करती है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा लोकतंत्र की अलग-अलग परिभाषाएं दी गई हैं। अमेरिकन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के अनुसार, "लोकतंत्र शासन का वह रूप है जिनमें जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन हो।"

ब्राइस के अनुसार, "लोकतंत्र शासन का वह प्रकार है जिसमें राज्य के शासन की शक्ति किसी विशेष वर्ग या वर्गों में निहित न होकर सम्पूर्ण जन-समुदाय में निहित है।"

इन परिभाषाओं के आधार पर लोकतंत्र की सामान्य रूप से निम्नलिखित विशेषताएं बतायी जा सकती हैं —

(1) इस शासन-प्रणाली के अन्तर्गत जनता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शासन करती है।

Scanned with CamScanner

प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली में जनता स्वयं शासन-व्यवस्था में भाग लेती है जबकि अप्रत्यक्ष शासन-प्रणाली में जनता की प्रतिनिधियों के द्वारा शासन में भाग लिया जाता है।

(2) लोकतंत्र में शासन का अस्तित्व जनता के हितों की रक्षा के लिए होता है, अर्थात् लोकतंत्र में सरकार सदैव एक साधन के रूप में होती है, साध्य (रूप में नहीं)

(3) जनता के प्रति उत्तरदायित्व इस शासन-प्रणाली की विशेषता होती है। इस शासन-व्यवस्था में यदि शासक द्वारा अपनी शक्ति का प्रयोग सर्वसाधारण के हित में नहीं किया जाता, तो सर्वसाधारण द्वारा शासन में परिवर्तन किया जा सकता है।

लोकतंत्रात्मक शासन के प्रकार :-

लोकतंत्रात्मक शासन के दो प्रकार माने जाते हैं –

(1) प्रत्यक्ष लोकतंत्र (2) अप्रत्यक्ष लोकतंत्र ।

जब जनता प्रत्यक्ष रूप से शासन कार्यों में भाग लेती है, नीति निर्माण करती, कानून बनाती और प्रशासन के अधिकारी नियुक्त कर उन पर नियन्त्रण रखती है, तो इसे प्रत्यक्ष लोकतंत्र कहते हैं। वर्तमान काल में स्विट्जरलैंड के 5 कैण्टनों में प्रत्यक्ष लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति प्रचलित है।

जब जनता स्वयं प्रत्यक्ष रूप से इस प्रकार के प्रभुसत्ता का प्रयोग न कर अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से कार्य करती है तो इसे प्रतिनिध्यात्मक या अप्रत्यक्ष लोकतंत्र कहते हैं।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में जनता संविधान द्वारा निर्धारित निश्चित अवधि के लिए अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है जिससे कानून निर्माण करने वाली व्यवस्थापिका का गठन होता है। संसदात्मक शासन-व्यवस्था में इस व्यवस्थापिका से ही कार्यपालिका का गठन होता है, लेकिन अध्यक्षात्मक शासन-व्यवस्था में जनता कार्यपालिका के प्रधान का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चुनाव करती है।

लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली के गुण

(1) जनकल्याण की साधना — लोकतन्त्र में जनता के उन प्रतिनिधियों के द्वारा शासन किया जाता है जिनका चुनाव जनता एक निश्चित समय के लिए करती है, जनता के प्रतिनिधि जनता की इच्छाओं, भावनाओं और आवश्यकताओं से पूर्णतया परिचित होते हैं और उनको शासन के अधिकार इसी आधार पर प्राप्त होते हैं कि वे इसका प्रयोग जनता के हितों और इच्छाओं के अनुसार करेंगे।

(2) सर्वाधिक कार्यकुशल शासन — लोकतंत्र किसी भी दूसरी शासन-व्यवस्था की अपेक्षा अधिक कार्यकुशल होता है और

Scanned with CamScanner

इसके अन्तर्गत सबसे अधिक शीघ्रतापूर्वक तथा आवश्यक रूप से जनता के हित में कार्य किये जाते हैं।

(3) सार्वजनिक शिक्षण — लोकतंत्र शासन का एक प्रकार ही नहीं है बल्कि वह राज्य, समाज और आर्थिक व्यवस्था का एक प्रकार भी है। इसके प्रयोग द्वारा जनता को प्रशासनिक, राजनीतिक तथा सामाजिक सभी प्रकार का शिक्षण प्राप्त होता है। इस गुण के कारण ही गैटल ने लोकतंत्र को नागरिकता की शिक्षा प्रदान करने वाला स्कूल कहा है।

(4) जनता का नैतिक उत्थान — प्रजातंत्र का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व और उनके नैतिक चरित्र को उच्चता प्रदान करता है। जनता को राजनीतिक शक्ति प्रदान कर लोकतंत्र उनमें आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न करता है।

(5) क्रान्ति से सुरक्षा — जब शासक वर्ग द्वारा एक लम्बे समय तक शासितों पर अत्याचार किये जाते हैं और इस प्रकार के अत्याचारों से मुक्ति पाने का कोई रास्ता नहीं दिखता, तब जनता द्वारा क्रान्ति की जाती है। लोकतंत्र में क्रान्ति की सम्भावना बहुत कम हो जाती है क्योंकि शासक वर्ग लोकमत के अनुसार ही शासन का संचालन करता है और यदि शासक अनुचित कार्य करे तो जनता उन्हें एक निश्चित समय बाद या विशेष परिस्थितियों में पहले ही अपदस्थ कर सकती है।

Scanned with CamScanner

दोष

(1) भ्रष्ट शासन-व्यवस्था — सैद्धान्तिक स्थिति चाहे जो भी हो, व्यवहार में लोकतंत्रीय शासन बहुत अधिक भ्रष्ट हो जाता है। व्यवहार में शासन एक राजनीतिक दल विशेष की इच्छानुसार ही किया जाता है और ऐसा देखा गया है कि निर्वाचन में जो लोग सत्तारूढ़ दल के सहायक होते हैं उन्हें शासन की ओर से अनेक प्रकार की सहायता पहुंचायी जाती है।

(2) दल प्रणाली का अहितकर प्रभाव — वर्तमान समय के प्रतिनिध्यात्मक प्रजातंत्र के संचालन के लिए राजनीतिक दल एक अनिवार्य आवश्यकता होती है, किन्तु ये राजनीतिक दल अपने व्यवहार से लोकतंत्र को भ्रष्ट कर देते हैं।

(3) सार्वजनिक धन और समय का अपव्यय — लोकतंत्र में धन और समय का अत्यधिक अपव्यय होता है। लोकतंत्रीय विधानसभाओं की लम्बी और जटिल कानून निर्माण प्रक्रिया के कारण कानूनों के निर्माण में बहुत ज्यादा समय लग जाता है।

(4) अयोग्यता की पूजा — लोकतंत्रीय शासन इस सिद्धान्त पर आधारित होता है कि प्रत्येक व्यक्ति को केवल एक ही मत दिया जाना चाहिए। लेकिन योग्यता की दृष्टि से सभी व्यक्ति समान नहीं होते हैं और इस प्रकार लोकतंत्र में गुण की अपेक्षा संख्या पर अधिक बल दिया जाता है।

Scanned with CamScanner